



Scanned by CamScanner



स्वतंत्रता आंदोलन भारत के इतिहास में एक पुरातनकारी घटना थी। अंग्रेजों की दुर्नीति और समन्वयक के प्रतिरोध में भारतीयों में एक नई जागृति और राजनीतिक चेतना उत्पन्न हुई। इस दासता के विरुद्ध जन-जागरण और आत्म सममान के भाव ने भारतीयों के मन में मुक्ति की उत्कण्ठ प्रेरणा उत्पन्न की। पूरा देश भारत भाता को दासता की बेड़ियों से मुक्त बनाने के लिए जुद्धित हो उठा और इस मुक्ति संग्राम में सबसे बड़ी भूमिका स्वतंत्रता सेनानियों की पत्रकारिता की ही थी।



भारतीय स्वतंत्रता आंदोलन और पत्रकारिता

डा. विश्वरत्न कौशिक

भारत के इतिहास में इसकी विपुल ऐतिहासिक सम्पत्तिका तथा कला-एवं संस्कृति, धर्म-दर्शन व सामाजिक संरचना ने अनेक विदेशी जाति-समूहों तथा आक्रमणवादी राज-शासकों को अपनी ओर आकर्षित किया। यूनानी, ग्रीक (यवन), शक, कुषाण, हूण, अरबों, तुर्कों (इस्लामिक साम्राज्य), मुगल, अफगान, अंग्रेज, फ्रांसिसी, पुर्तगाली आदि शासक व्यापारिक तथा राज्य विस्तार के अपने उद्देश्य से भारत पर आक्रमण भी करते रहे और प्रथम तथा द्वितीय भी। यहाँ शासकों के अत्याचारों की ईश्वर दूरीकृत कसमों ने भारत में अनेक व्यापार और राज्य विस्तार किया। यह वह समय था जब भारत में मराठों, राजपूतों, सिक्खों और कई छोटी-छोटी विचारकों के साथ कम्प्यूटर मूलक शासन बहादुर शाह जफर का दिल्ली पर शासन था। हैदराबाद में निजामशाही का शासन था। ईश्वर दूरीकृत कसमों की सार्वभौमिक नीतियों का संघर्ष 1857 में विरोध होने लगा था। जाह-उल-मुल्क अली खानों ने विद्रोह का विचार मुकदिराक और अफगान देश-ओपी दासता से मुक्ति के लिए स्वातंत्र्य पत्र ही उठाया।

स्वतंत्रता आंदोलन भारत के इतिहास में एक पुरातनकारी घटना थी। अंग्रेजों की दुर्नीति और समन्वयक के प्रतिरोध में भारतीयों में एक नई जागृति और राजनीतिक चेतना उत्पन्न हुई। इस दासता के विरुद्ध जन-जागरण और आत्म सममान के भाव ने भारतीयों के मन में मुक्ति की उत्कण्ठ प्रेरणा उत्पन्न की। पूरा देश भारत भाता को दासता की बेड़ियों से मुक्त बनाने के लिए जुद्धित हो उठा और इस मुक्ति संग्राम में सबसे बड़ी भूमिका स्वतंत्रता सेनानियों की पत्रकारिता की ही थी।

स्वतंत्रता आंदोलन में देश को भाषाओं में होने वाली पत्रकारिता के प्र-पुलन-स्वयं को जलता का प्रतिनिधि सम-पत्रकारिता में आये थे। इनमें अधिकांश पत्रकार स्वतंत्रता सेनानियों ही थे जो आगे चलकर राजपूत, कवि, लेखक, समाजसेवी, शिक्षक तथा कलाकार भी। ये जनजागृति-पत्रकारिता आत्म-सममान, महात्मा गांधी, डॉ. राजेन्द्र प्रसाद, व. आशोकानन्द, जयप्रकाश नारायण, बिधानी, आदि-इति-आदि प्रमुख पत्रकार इसके उल्लेखनीय नाम हैं। आशोकानन्द के समय में 'भारत पत्र', 'अध्यात्म प्रसार', 'जसिह', 'केसरी', 'सम्भार', 'दशरथ विद्यालय भारत', 'जागरण' आदि ऐसे प्रमुख

Scanned by CamScanner Coordinator

राजकीय स्नातकोत्तर (साहित्य) 3-अगस्त 2019

175 (अगस्त) Raj.

ISSN

राजकीय स्नातकोत्तर (साहित्य) राजगढ़ (अगस्त)

राजकीय स्नातकोत्तर (साहित्य) राजगढ़ (अगस्त)



Scanned by CamScanner



□ डॉ. शिवराज कोशिक

भारतीय युवाओं में ही अंतरिक्ष से संबंधित कुछ ऐसे प्राणिक विचार्य तथा सिद्धांतों का निरूपण मिलता है जिससे यह सिद्ध होता है कि भारत के इतिहास में अंतरिक्ष से संबंधित अनेक अन्वेषण हुए हैं तथा उनकी प्राथमिकता विश्व स्तर पर रही है। यह अलग बात है कि विभिन्न सारस्रणों में विदेशों से आने वाले व्यापारिक तथा आक्रामक 'अक्रिय संप्रदायों' ने भारत के इस अंतरिक्ष इतिहास के प्रयास को भिदा दिये ता, या फिर अपने साध ले जाकर उन्हें अपने बाध से प्रकाश किया। भारत के प्राचीनतम ग्रंथों में ब्रह्मण्ड को उल्लेख, विस्तार तथा स्थितियों का जो वर्णन मिलता है, आधुनिक विज्ञान के सिद्धांतों से उनकी सहायता पुष्टि होती है।

भारतीय अंतरिक्ष अभियान : इतिहास और उपलब्धियाँ

मनुष्य का स्वाभाव एतद्वयः परितंत्रनीलजल को कुम्भारो रूप में स्वीकार करने का रहा है। यह परिवर्तनशीलता ही इसकी स्थाई प्रकृति है, यही उसका विकास है। जीवन के विभिन्न क्षेत्रों में जहाँ वाली कठिनाइयों को सुलभ बनाना, उनकी स्वाहायता को प्राप्त करना तथा कठिन से कठिन समस्या का वैज्ञानिक समाधान खोजना मानवीय विकास के चरणों की ही भूजला क्त प्रतीक है। जीवन के पहलों को सुलझाना और उनके निम्नतमस्तुत प्रयास ही मनुष्य की इनकी प्रकृतियों का परिणाम है। इसी क्रम में विश्व के अनेक देशों के वैज्ञानिकों ने जल, धूल और तम की धारा के विभिन्न अभियान चलाये। वैज्ञानिकों में साक्षित का संकलन करने हुए मनुष्य अंतरिक्ष में उड़ान भरने लगा। यही नहीं बल्कि अंतरिक्ष में गतिमान विधिपत्रों पर जीवन की खोज के साथ मनुष्यों को भूखी पर होने वाली कठिनायतों के समाधान के लिए यहाँ की अनुकूलता पर सभी विकसित तथा विकासशील देशों में अंतरिक्ष अनुसंधान किया। इस तरह अंतरिक्ष अन्वेषण के क्षेत्र में आधुनिक काल में अग्रणी देश रहे हैं जिनमें ब्रह्मण्ड, भारत पर अग्रणी की स्थिति, कश्मिकीय सोवियतों तथा वैज्ञानिक क्षेत्रों में ब्रह्मण्ड की भूमिका निभाई है। भारत के प्रसिद्ध वैज्ञानिक डॉ. विक्रम साराभाई के नेतृत्व में भारत ने अंतरिक्ष अनुसंधान के क्षेत्र में ब्रह्मण्ड को आज उपलब्धीय एवं विश्व के अग्रणी देशों में भारत को स्थापित कर रखा है।

यद्यपि भारतीय युवाओं में ही अंतरिक्ष से संबंधित कुछ ऐसे प्राणिक विचार्य तथा सिद्धांतों का निरूपण मिलता है जिससे यह सिद्ध होता है कि भारत के इतिहास में अंतरिक्ष से संबंधित अनेक अन्वेषण हुए हैं तथा उनकी प्राथमिकता विश्व स्तर पर रही है। यह अलग बात है कि विभिन्न ब्रह्मण्डों में विदेशों से आने वाले व्यापारिक तथा आक्रामक 'अक्रिय संप्रदायों' ने भारत के इस अंतरिक्ष इतिहास के प्रयास को भिदा दिये



या या फिर अपने साथ ही जाकर उन्हें अपने देश से प्रकाश किया। भारत के प्राचीनतम ग्रंथों में ब्रह्मण्ड की उल्लेख, विस्तार तथा स्थितियों का जो वर्णन मिलता है, आधुनिक विज्ञान के सिद्धांतों से उनकी सहायता पुष्टि होती है। इस क्रम में विश्व के अनेक देशों के वैज्ञानिकों ने जल, धूल और तम की धारा के विभिन्न अभियान चलाये। वैज्ञानिकों में साक्षित का संकलन करने हुए मनुष्य अंतरिक्ष में उड़ान भरने लगा। यही नहीं बल्कि अंतरिक्ष में गतिमान विधिपत्रों पर जीवन की खोज के साथ मनुष्यों को भूखी पर होने वाली कठिनायतों के समाधान के लिए यहाँ की अनुकूलता पर सभी विकसित तथा विकासशील देशों में अंतरिक्ष अनुसंधान किया। इस तरह अंतरिक्ष अन्वेषण के क्षेत्र में आधुनिक काल में अग्रणी देश रहे हैं जिनमें ब्रह्मण्ड, भारत पर अग्रणी की स्थिति, कश्मिकीय सोवियतों तथा वैज्ञानिक क्षेत्रों में ब्रह्मण्ड की भूमिका निभाई है। भारत के प्रसिद्ध वैज्ञानिक डॉ. विक्रम साराभाई के नेतृत्व में भारत ने अंतरिक्ष अनुसंधान के क्षेत्र में ब्रह्मण्ड को आज उपलब्धीय एवं विश्व के अग्रणी देशों में भारत को स्थापित कर रखा है।

शैक्षिक संस्थान (आरजे) | डिसेम्बर 2019

Scanned by CamScanner

Coordinator
H.A.C. CELL

AN-57

(Alwar Raj.)

ISSN 2581

12 • अंक 4 • पृष्ठ 44 • जयपुर • कार्तिक-मार्गश्रुष, विक्रम संम्वत् 2076 • 1 नवम्बर 20

शैक्षिक संस्थान

सिन्धु
राजकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय
राजगढ़ (अलवर) राज.



गांधीजी एवं वर्तमान राजनीति

SHRI P.M. MEENA

Political Science, Govt. College, Rajgarh, Alwar, Rajasthan, India

सार

वर्तमान अस्थिरता के दौर में जहाँ एक ओर कोविड-19 जैसी महामारी लोगों को हताश और बेहाल किये हुए है वहीं दूसरी ओर इसके आर्थिक परिणाम भी लोगों को भविष्य के प्रति आशंकित किये हुए हैं। कभी हाथरस जैसे कांड लोगों को मानवीय मूल्यों पर चिंतन हेतु विवश करते हैं तो कभी डूंगस जैसे मामले समाज को झकझोरते हैं। आज संपूर्ण विश्व बाजारवाद के दौड़ में शामिल हो चुका है। लालच की परिणति युद्ध की सीमा तक चली जाती है। ऐसे में गांधीवाद की प्रासंगिकता पहले से कहीं अधिक हो जाती है। तो क्या गांधीवाद को अपनाने के लिये हमें टोपी या धोती पहनने की जरूरत है या फिर ब्रह्मचर्य अपनाने या फिर घृणा करने की आवश्यकता है? नहीं, इनमें से कुछ भी करने की आवश्यकता नहीं है। बल्कि घृणा को दूर करने के लिये गांधीवाद को अपनाने की जरूरत है।

परिचय

अब प्रश्न यह उठता है कि यह गांधीवाद है क्या? किसी भी शोषण का अहिंसक प्रतिरोध, सबसे पहले दूसरों की सेवा, संचय से पहले त्याग, झूठ के स्थान पर सच, अपने बजाय देश और समाज की चिंता करना आदि विचारों को समग्र रूप से गांधीवाद की संज्ञा दी जाती है। गांधीवादी विचार व्यापक रूप से प्राचीन भारतीय दर्शन से प्रेरणा पाते हैं और इन विचारों की प्रासंगिकता अभी भी बरकरार है। आज के दौर में जब समाज में कल्याणकारी आदर्शों का स्थान असत्य, अवसरवाद, धोखा, चालाकी, लालच व स्वार्थपरता जैसे संकीर्ण विचारों द्वारा लिया जा रहा है तो समाज सहिष्णुता, प्रेम, मानवता, भाईचारे जैसे उच्च आदर्शों को विस्तृत करता जा रहा है। विश्व शांति शस्त्र एकत्र करने की स्पर्धा में लगी हुई है लेकिन एक छोटे से वायरस को हरा पाने में असमर्थ और लाचार साबित हो रही है। ऐसे में विश्व शांति की पुनर्स्थापना के लिये, मानवीय मूल्यों को पुनः प्रतिष्ठित करने के लिये आज गांधीवाद नए स्वरूप में पहले से कहीं अधिक प्रासंगिक हो उठा है।[1]

गांधी जी धर्म व नैतिकता में अटूट विश्वास रखते थे। उनके लिये धर्म, प्रथाओं व आंडबरों की सीमा में बंधा हुआ नहीं वरन् आचरण की एक विधि थी। गांधी जी के अनुसार, धर्मविहीन राजनीति मृत्युजाल है, धर्म व राजनीति का यह अस्तित्व ही समाज की बेहतरी के लिये नींव तैयार करता है। गांधी जी साधन व साध्य दोनों की शुद्धता पर बल देते थे। उनके अनुसार साधन व साध्य के मध्य बीज व पेड़ के जैसा संबंध है एवं दूषित बीज होने की दशा में स्वस्थ पेड़ की उम्मीद करना अकल्पनीय है।

गांधीवादी विचारधारा महात्मा गांधी द्वारा अपनाई और विकसित की गई उन धार्मिक-सामाजिक विचारों का समूह है जो उन्होंने पहली बार वर्ष 1983 से 1914 तक दक्षिण अफ्रीका में तथा उसके बाद फिर भारत में अपनाई गई थी।

गांधीवादी दर्शन न केवल राजनीतिक, नैतिक और धार्मिक है, बल्कि पारंपरिक और आधुनिक तथा सरल एवं जटिल भी है। यह कई पश्चिमी प्रभावों का प्रतीक है, जिनको गांधीजी ने उजागर किया था, लेकिन यह प्राचीन भारतीय संस्कृति में निहित है तथा सार्वभौमिक नैतिक और धार्मिक सिद्धांतों का पालन करता है। गांधीजी ने इन विचारधाराओं को विभिन्न प्रेरणादायक स्रोतों जैसे- भगवतगीता, जैन धर्म, बौद्ध धर्म, बाइबिल, गोपाल कृष्ण गोखले, टॉलस्टॉय, जॉन रस्किन आदि से विकसित किया। टॉलस्टॉय की पुस्तक 'द किंगडम ऑफ गॉड इज विदिन यू' का महात्मा गांधी पर गहरा प्रभाव था। गांधीजी ने रस्किन की पुस्तक 'अट्ट दि स लास्ट' से 'सर्वोदय' के सिद्धांत को ग्रहण किया और उसे जीवन में उतारा।

गांधीजी ने आजादी की लड़ाई के साथ-साथ छुआछूत उन्मूलन, हिन्दू-मुस्लिम एकता, चरखा और खादी को बढ़ावा, ग्राम स्वराज का प्रसार, प्राथमिक शिक्षा को बढ़ावा और परंपरागत चिकित्सीय ज्ञान के उपयोग सहित तमाम दूसरे उद्देश्यों पर कार्य करना निरंतर जारी रखा। सत्य के साथ गांधीजी के प्रयोगों ने उनके इस विश्वास को पक्का कर दिया था कि सत्य की सदा विजय होती है और सही रास्ता सत्य का रास्ता ही है। आज मानवता की मुक्ति सत्य का रास्ता अपनाने से ही है। गांधी जी सत्य को ईश्वर का पर्याय मानते थे। गांधीजी का मत था कि सत्य सदैव विजयी होता है।

और अंगरेजों का संघर्ष सत्य के लिये है तो हिंसा का लेशमात्र उपयोग किये बिना भी वह अपनी सफलता सुनिश्चित कर सकता है।



अनुक्रमणिका

संपादकीय (1)

संपादकीय (2)

आलेख

1. राष्ट्रीय अस्मिता और हिन्दी
डॉ. शिवशरण कोशिक
2. वैश्विक परिदृश्य में हिन्दी का स्वरूप
डॉ. राम किंकर पाण्डेय
3. राष्ट्रकवि दिनकर का राष्ट्रवाद
प्रोफेसर महन्द्र प्रसाद सिंह
4. आधुनिक मराठी साहित्य
डॉ. बलीराम धापसं
5. तुलसी का रामराज्य : पाठ-कुपाट
डॉ. निरंजन कुमार यादव
6. गाँधी रहेंगे, जैसे बुद्ध रहे हैं
प्रोफेसर हितेन्द्र पटेल
7. गाँधी की नजरों में जापान
डॉ. वेदप्रकाश सिंह
8. भक्तिकालीन कवियों का रेखा-काव्य
डॉ. पंकज पराशर
9. उत्तराखण्ड में भू-जल संसाधन एवं प्रबंधन की राजनीति
हरीश दत्त
10. रेत हूँ, ढेर नहीं : धार की एक झलक
डॉ. मनीषा चौधरी
11. मध्यकालीन राजस्थान में ठिकाना व्यवस्था की स्थापना
हेमन्त चौहान
12. सांस्कृतिक वैशिष्ट्य से समादृत लोकगुमि : नागालैण्ड
डॉ. कुमार वरुण

188

समन्वयक
Coordinator
C-CELL

उज्ज्वली College, Rajgarh (Alwar)

प्राचार्य
राजकीय माध्यमिक विद्यालय
राजगढ़ (अलवर) राज.



ISSN 0975-119X

UGC-CARE GROUP I LISTED

वर्ष 12 अंक 6 नवंबर-दिसंबर 2020

दृष्टिकोण

कला, मानविकी एवं वाणिज्य की मानक शोध पत्रिका

India's Leading Referred Hindi Language Journal



[Signature]
Coordinator
INFORM CELL

राजकीय महाविद्यालय, राजगढ़ (अलवर) राज.

IMPACT FACTOR : 5.051

[Signature]
राजकीय महाविद्यालय
राजगढ़ (अलवर) राज.

संस्कृत के प्रमुख पुराणों में पर्यावरण चेतना-डॉ० आशा सिंह रावत	290
स्वातंत्रोत्तर भारत की सामाजिक समरसता की चुनौतियाँ एवं पं. दीनदयाल उपाध्याय का चिंतन-डॉ० हरवंस सिंह	296
ऑन लाईन शिक्षण एवं प्रभाव-डॉ० महेश कुमार शर्मा; डॉ० श्याम सुन्दर कौशिक	300
तुलसीदास के जीवन संबंधी विवादित विविध दृष्टिकोण (जन्म संबंधित विवादित मुद्दे)-डॉ० मंजुला	304
सन साठ के बाद की हिन्दी कविता में भाषा और संवेदना की अन्तः संगति-डॉ० रंजीत सिंह	308
लक्ष्मीनारायण मिश्र के नाटकों में सामाजिक आदर्श-डॉ० उमेश कुमार शर्मा	312
मोक्ष : मानव जीवन का परम लक्ष्य-डॉ० प्रिय रंजन	318
प्राथमिक शिक्षा की गुणवत्ता का अभिभावकों के दृष्टिकोण से सर्वेक्षणात्मक अध्ययन (प्रयागराज जनपद के विशेष संदर्भ में) -डॉ० श्रवण कुमार; डॉ० गिरीश कुमार द्विवेदी	321
अलवर जिले में भूमि उपयोग एवं फसल प्रतिरूप का भौगोलिक अध्ययन-राजेन्द्र परेवा; डॉ० विजय कुमार वर्मा	326
भारत में उच्च शिक्षा का निजीकरण : एक अध्ययन-नागेश्वर कुमार	331
सवाईमाधोपुर जिले में जल संसाधनों का भौगोलिक अध्ययन-अंकुश मीना; डॉ० जगफूल मीना	337
प्राचीन नगरी मल्हार के स्थापत्य कला, मूर्तिकला एवं मृणमूर्तियों का ऐतिहासिक विश्लेषण-मंजू साहू; डॉ० रामरतन साहू	346
संत साहित्य पर आचार्य रजनीश (ओशो) की अभिनव दृष्टि-शाहिद हुसैन; डॉ० स्नेहलता निर्मलकर	350
भारतीय समाज में बढ़ती आर्थिक व सामाजिक विषमताओं के परिणामों एवम चुनौतियों के परिपेक्ष्य में एक अध्ययन-शुभ सेजवार	354
लॉक डाउन में भिवाड़ी के वायु प्रदूषण स्तर का भौगोलिक विश्लेषण-सत्यदेव	360
कोरोना महामारी से उपजी इंफोडेमिक में आरोग्य सेतु की भूमिका एवं स्थिति का अध्ययन-डॉ० अमरेन्द्र कुमार	364
"अंधा युग" में प्रतीकात्मकता-डॉ० राजेश्वरी सिंह तोमर	368
मानव तस्करी (बाल श्रम) से सम्बन्धित केशों का अध्ययन-सतीश कुमार	371
नवीन शिक्षा नीति 2020 के परिप्रेक्ष्य में पुस्तकालयों की भूमिका-डॉ० अर्चना शुक्ला	375
अमेरिका में नस्लीय भेदभाव का ऐतिहासिक परिप्रेक्ष्य-योगेन्द्र प्रसाद शर्मा	379
बच्चों एवं महिलाओं के विकास में आंगनबाड़ी केंद्र की भूमिका-स्मिता कुमारी	382
बदलते नामों का स्वरूप (इतिहास एवं वर्तमान संदर्भ में)-किसलय कुमार शुक्ल	384
प्राचीन बिहार के बौद्ध महाविहार विक्रमशिला : एक संक्षिप्त अवलोकन-राहुल कुमार झा	386
रमेशचन्द्र शाह की कहानियों में समाज के पारम्परिक मूल्यों की प्रासंगिकता-कृपा शंकर	389
कमजोर होती कांग्रेस-अजय कुमार; अरविंद कुमार	394
जयशंकर प्रसाद के आधुनिकता और दृष्टि निर्माण में नवजागरण की प्रासंगिकता-अखिलेश यादव	397
मौर्य काल में विभिन्न आक्रमणों के ऐतिहासिक प्रभाव का अनुशीलन-शारदा प्रसाद सिंह	400
चम्पूकाव्यस्य परिभाषा रम्यत्वं महत्त्वम्-दीपक कुमार महतो	402
विभिन्न स्कूल वातावरण में बच्चों में भाषायी अधिग्रहण का मनोवैज्ञानिक अध्ययन-ज्योतिमा पाण्डेय	407
नामधर: असमिया जाति की एकता व समता का प्रतीक-विद्या दास	411
राष्ट्रीय एकता के लिए अनुवाद साहित्य का महत्त्व-डॉ० (श्रीमती) रेखा दुबे; श्रीमती अलका यादव	414
उत्तरी बिहार में कौशल विकास: दृष्टि और रणनीति-आलोक कुमार	417
विद्यालय शिक्षा में विद्यार्थियों की विज्ञान अभिरुचि विकसित करने की नव-प्रवृत्तियां-डॉ० महेश्वर गंगाधर कक्लावे	419
गांधी जी : एक दर्शन (वर्तमान परिप्रेक्ष्य में)-डॉ० सोनी यादव	423
जूटन' - दलित जीवन का महाकाव्य--दिलना कं	

Co-ordinator
राजकीय विद्यालय, राजगढ़ (अजमेर) राज.

नवम्बर-दिसम्बर, 2020

दृष्टिकोण



DRISHTIKON

India's Leading Multidisciplinary Referred Hindi Language Journal

UGC CARE LISTED

Certificate Of Publication

This is to certify that Mr./Ms. रवि शर्मा (Author, paper from, UGC CARE LISTED), in recognition of Publication of the

Paper entitled राजस्थान में कृषि उत्पादन और प्रवर्धन करने वाले कारक

Published in Drishtikon Journal

Vol. 12 Issues 2 in year अक्टूबर 2020

Impod Price: 5.21

ISSN 0975-119X



राजस्थान विश्वविद्यालय
राजगढ़ (अलिपर) राज.

GOVT. College Rajgarh (Alwar) Raj.
CELL

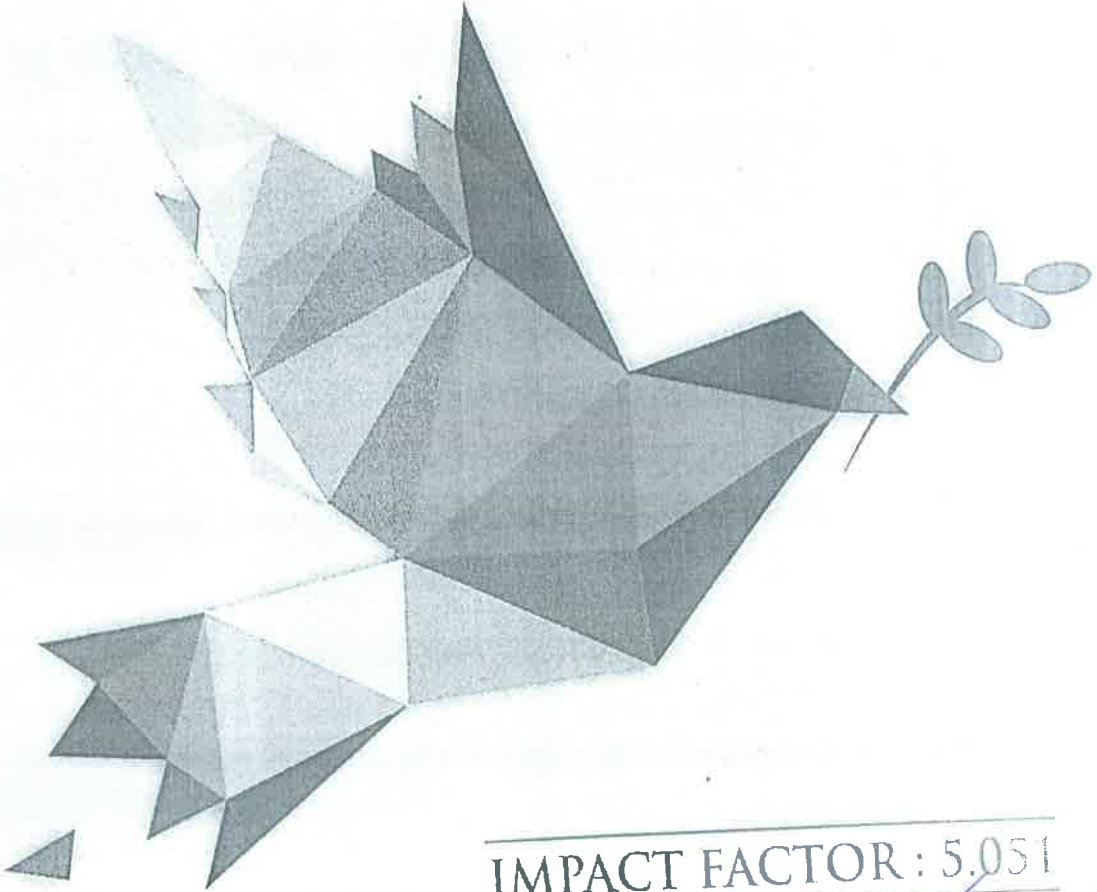
ISSN 0975-119X

UGC-CARE GROUP I LISTED

वर्ष 12 अंक 5 सितंबर-अक्टूबर 2020

दृष्टिकोण

कला, मानविकी एवं वाणिज्य की
मानक शोध पत्रिका



IMPACT FACTOR : 5.051

India's Leading Referred Hindi Language Journal

प्राचार्य
राजकीय महाविद्यालय
सजाण्ड (अलवर) राज.

समाजशास्त्र
राजकीय महाविद्यालय (अलवर) (अलवर) राज.

जनसंख्या घनत्व: चतरा जिला (झारखण्ड) के संदर्भ में एक प्रतीक अध्ययन-डॉ० मनीष कुमार	285
पर्यावरणीय मुद्दे एवं आपदा प्रबंधन-मीना शर्मा	289
विद्यालयी शिक्षा में राष्ट्रीय संस्कृति के समावेश के क्षेत्र-श्रीमती मीनाक्षी मोदी	292
माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत उच्च, मध्यम व निम्न बौद्धिक स्तर के विद्यार्थियों की गणित उपलब्धि पर सूचना	295
एवं संचार प्रौद्योगिकी के प्रभाव का अध्ययन-नरेन्द्र कुमार; डॉ० मंजू गुप्ता	301
शीतांजलि श्री कृत 'तिरोहित' उपन्यास में स्त्री-विमर्श-नीलम कुमारी	304
स्त्री सुन्नत की भयावहता और उसके प्रति विद्रोह : दर्दजा-निशा देवी	307
वैश्विक जल प्रदूषण समस्या समाधानार्थ भारतीय जल संस्कृति-राजपाल सिंह यादव	310
विद्यार्थियों में पर्यावरणीय चेतना के लिए शिक्षा का महत्त्व-डॉ० गिरीश कुमार द्विवेदी	313
वनहरा ग्राम (बलिया जनपद) की जनसंख्या के आयु वर्ग संरचना का भौगोलिक विश्लेषण-रिमी राय	318
जिद्दू कृष्णमूर्ति के दर्शन में तत्व मीमांसा-डॉ० सत्य प्रकाश तिवारी	323
महिला सशक्तिकरण में शिक्षा की भूमिका-सुनिता सारस्वत	326
"विद्यालयी शिक्षा में भारतीय संस्कृति का समावेशन"-डॉ० कंचन शर्मा	329
भरतपुर का भौगोलिक एवं ऐतिहासिक अध्ययन-डॉ० कुलराज व्यास	334
भारत छोड़ो आन्दोलन में विहार के व्यापक स्वरूप का वर्णन-लव कुमार	337
भारत में राज्यपाल का पद : वर्तमान परिप्रेक्ष्य के संदर्भ में-डॉ० अल्पना व्यास	340
भारतीय उच्च शिक्षा पर ई-गवर्नेंस का प्रभाव-चन्दना शर्मा	343
कल्याणकारी राज्य और सामाजिक सुरक्षा-प्रतिभा सिंह	346
स्वच्छतावादी नाट्य-प्रवृत्तियाँ-डॉ० रेणु कुमारी	349
सुमित्रानन्दन पंत की रचना 'गुंजन' का शैलीवैज्ञानिक अध्ययन-उदिप्त तालुकदार	353
निराला के काव्य में अंग्रेजी राज का चरित्र-ववीता कुमारी	357
लक्ष्मीनारायण मिश्र के नाटकों में आर्थिक जीवन की अभिव्यक्ति-डॉ० उमेश कुमार शर्मा	361
स्मृति ग्रंथों में पराशर स्मृति का स्थान एवं महत्त्व-तरुण कुमार सिंह	363
मीटूइन्डिया: एक आलोचनात्मक पड़ताल-अपर्णा दीक्षित	366
भक्तिकालीन कविता में लोकधर्म-डॉ० अजय कुमार यादव	369
मलेरिया रोग में आहार एवं पापण का चिकित्सा भौगोलिक अध्ययन-देवेन्द्र कुमार शर्मा; डॉ० विजय कुमार वर्मा	378
वर्तमान समय में गौंधयन अर्थशास्त्र की प्रासंगिकता-डॉ० शम्मी कुमारी	381
पार-सांस्कृतिक विवाहों में महिलाओं की बदलती हुई सांस्कृतिक पहचान: धौलपुर जिले के विशेष संदर्भ में	389
-प्रो० मंजू सिंह; डॉ० पारो मिश्रा; सुश्री सोनिका	393
सोशल मीडिया और समाज : एक विश्लेषणात्मक अध्ययन-डॉ० युवराज कुमार	397
असम के आदिवासी लोकगीत : एक परिचयात्मक अध्ययन-मिजानुर हुसैन मण्डल	404
परम्परागत वैवाहिक जीवन की त्रासदी और प्रेम का द्वन्द्व (सुभद्राकुमारी चौहान की कहानियों के विशेष सन्दर्भ में)-आरती यादव	408
विहार में खाद्य प्रसंस्करण उद्योग और इसकी चुनौतियाँ-रंजीत कुमार	414
भारत की विदेश नीति पर सार्क के प्रभाव का विश्लेषण-डॉ० ऋचा सिंह	418
भारत में कृषि श्रमिकों की प्रास्थिति-दिपेन्द्र सिंह	423
राजगढ़ तहसील में कृषि उत्पादन को प्रभावित करने वाले कारक-हरीश मीना; डॉ० जगफूल मीना	425
संगीत-व्यापार एवं रोजगार के साधन-डॉ० चन्द्रेश्वर प्रसाद कुशवाहा	427
ध्रुवपद गायन शैली में विहार का स्थान-डॉ० सुरेन्द्र कुमार राम	431
डेविड ह्यूम के ज्ञानमीमांसा का समीक्षात्मक अध्ययन-सुरवाला वर्मा	435
अन्तर्राष्ट्रीय बाजार में भारतीय वस्त्रों का आर्थिक महत्त्व-प्रोफेसर (डॉ०) संजय कुमार झा	438
ई-गवर्नेंस और डिजिटल इंडिया: भारतीय नागरिकों को सशक्त बनाना-डॉ० संतोष कुमार यादव	438
भारत में क्षेत्रीयतावाद की समस्या : पृथक मिथिला राज्य के संदर्भ में-डॉ० गुंजन कुमार	438

Foliar Biochemical Changes During Gall Formation in *Mitragyna parvifolia*

*Om Prakash Meena and Rishi Kesh Meena

Department of Botany,
University of Rajasthan,
JAIPUR-302004

*Corresponding Author

Email:op21meena@gmail.com

Received : 25.02.2020; Revised : 28.04.2020; Accepted : 01.05.2020**ABSTRACT**

Mitragyna parvifolia is a medicinally important plant which is native to India and Shrilanka. This plant is widely used by tribal people of Rajasthan and other Ayurvedic practitioners. Normal leaf and leaf gall of *Mitragyna parvifolia* were collected and categorized in normal (healthy leaf) and galled leaf. In the present investigation an attempt was made to study the changes of some metabolites during the gall formation on leaf of *Mitragyna parvifolia* attacked by gall insect. Total soluble sugar, total phenol and peroxidase activities were found high in gall leaves as compared to healthy leaves but chlorophyll contents and polyphenol oxidase activities were recorded high in normal leaf and protein contents were slightly high in normal leaves as compared to infected or gall leaves.

Figure : 00

References : 26

Table : 01

KEY WORDS : Biochemical changes, Healthy leaf, Leaf gall, *Mitragyna parvifolia***Introduction**

Mitragyna parvifolia belongs to family Rubiaceae. This plant is also known as Kaim²⁴, is an ethano-medicinally important plant which is widely used by tribal people of Rajasthan and other Ayurvedic practitioners. The fruit juice of this plant is used to increase breast milk in lactating mothers. Leaves of plant are used to dress wounds and ulcers to alleviate pain, swelling and is better for healing^{18,19,21}. Leaf extract of this plant is to be both analgic and has antimicrobial potential¹⁰ and fruits have anthelmintic activity¹³. With the development of disease, a complex series of biochemical reactions proceed in an orderly and highly integrated manner. Initially metabolic activities of parasites are much less than host metabolic activities because of relatively simple body structure but after or during the infection, equilibrium is formed between host and parasite suggesting their metabolic equality²⁶. Metabolic activities of host decrease and parasite activities increase simultaneously which lead to gall formation. Hence an attempt has been made to study the changes in the biochemical profile of healthy and infected leaves (gall) of *Mitragyna parvifolia*.

Materials and Methods

Healthy and infected leaf samples of *Mitragyna parvifolia* were collected from Kadamdungri adjoining areas of Jaipur. Visual scoring method was adopted for the observation of gall development in plants. Infected

leaves were categorized into young, old and mature and healthy leaves were used for the comparative analysis.

Analysis of total chlorophyll content

Total chlorophyll content and healthy and galled leaves were estimated²⁰. One gram quantity of fresh leaves of each sample of healthy and galled leaf homogenized with 10 ml acetone and centrifuged homogenate at 3000rpm for 10 minutes. Supernatant was collected in separate tubes and repeated acetone extraction of tissues until extract was free from pigment and finally optical density was measured at 645 and 883 nm and calculated total chlorophyll content.

Total soluble sugars

Quantitative analysis of total sugars was done by the phenol sulphuric acid reagent method². The optical density at 490 nm was measured and then calculated total sugars and standard curve was prepared by using known concentrations of glucose. The quantity of total sugar was expressed as mg/g fresh weight of tissue.

Total protein

Normal and gall fresh tissues extracted with 5.0 ml of 5% trichloroacetic acid (TCA)¹¹. 5.0 ml of alkaline copper reagent was added to the dissolved residue and allowed to stand for 10 minutes and samples were calculated with a standard curve prepared from bovine serum albumin.

प्रचार्य
राजकीय शास्त्रज्ञ संस्थान
राजसमूह (अजमेर) राज.

3rd
COORDINATOR
GOVT. COLLEGE, RAJGARH (ALWARI) RAJ.
राजकीय महाविद्यालय
राजसमूह (अजमेर) राज.

PAPER 2020



International Journal of Botany Studies

Online and Print Journal, Indexed Journal, Refereed Journal, Peer Reviewed Journal

ISSN: 2455-541X, Impact Factor: RJIF 5.12

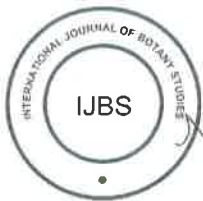
Publication Certificate

This certificate confirms that "Om Prakash Meena" has published article titled "Analysis of impulsive constituents in normal leaf and insect stimulated leaf gall of *Mitragyna parvifolia*".

Details of Published Article as follow:

Volume : 5
Issue : 2
Year : 2020
Page Number : 79-82
Certificate No. : 5-2-57
Date : 16-04-2020

Yours Sincerely,



International Journal of Botany Studies

www.botanyjournals.com

Ph.: 9999888931

प्रचारक
राजकीय महाविद्यालय काशीपाला
राजगढ़ (अलीपुर) राज.

समन्वयक
Coordinator
राजकीय महाविद्यालय काशीपाला (अलीपुर)



International Journal of Biological Innovations

Available online: <http://ijbi.org.in> | <http://www.gesa.org.in>

DOI: <https://doi.org/10.46505/IJBI.2020.2.1.36-41>



E-ISSN: 2582-1032

Review Article

CLINICAL MANIFESTATIONS AND PROTECTIVE MEASURES OF ENVIRONMENTAL NOISE: AN OVERVIEW

Raaz K. Maheshwari^{1*}, Ranjeet Poonia², Mahendra Singh³,
Ashok K. Kakodia⁴, Anil Kumar⁵ and Sulochana⁶

¹Department of Chemistry, SBRM Govt. PG College, Nandgaon, Raigarh (Jharkhand)

²Department of History, SBRM Govt. PG College, Nandgaon, Raigarh (Jharkhand)

³Department of Zoology, SBRM Govt. PG College, Nandgaon, Raigarh (Jharkhand)

⁴Department of Chemistry, SGG Govt. PG College, Baramulla, Jammu (Jammu & Kashmir)

⁵Department of Physics, Govt Bangur College, Didwana, Rajasthan (Rajasthan)

*Corresponding author: rkmgreenchem.jaipur@gmail.com

Received: 20.03.2020

Accepted: 15.05.2020

Published: 17.05.2020

Abstract: Noise pollution (or environmental noise) refers to any sound that disrupts the activity or balance of human and animal life. It reduces productivity and affects the mental activity. The noise is generated by the human through various activities. Noise must be controlled and prevented by using various effective measures in today's need. This review basically discuss the various sources of noise, dB scale, equipments used in the measurement of noise, effects of noise pollution on health, control of indoor noise, control technologies, and Indian penal codes to prevent noise pollution are the main points of discussion.

unpleasant sound that disturbs human and negatively affects the mental and activities. The noise is generated by the human through various activities. The source itself is the main cause of noise. The measurement of noise is done in dB scale. The effects of noise pollution on health are discussed. The control technologies and Indian penal codes to prevent noise pollution are the main points of discussion.

Keywords: Behavioral problems, Cardiovascular, Cognitive performance, Psychological stress.

unpleasant sound that disturbs human and negatively affects the mental and activities. The noise is generated by the human through various activities. The source itself is the main cause of noise. The measurement of noise is done in dB scale. The effects of noise pollution on health are discussed. The control technologies and Indian penal codes to prevent noise pollution are the main points of discussion.

INTRODUCTION

Any sound that is unpleasant or irritating is called noise. Noise can be defined as, "wrong sound in the wrong place at the wrong time." The term "noise" is derived from the Latin word "noxia", which means injury or hurt. Noise by definition is unwanted sound produced through natural causes such as wind, volcanoes, and ocean as well as man-made sources like automobiles, machines, explosives, loud

speakers etc. Noise pollution is a major environmental problem that has become an alarming rate and become a serious threat to human lives. The major sources of noise pollution are industries, transportation (air, road), electronic gadgets, music systems, and speakers, etc. Any social or cultural activity cannot be held without causing noise. There is no doubt that with the advancement of science and technology, the concept of silence is about to disappear.

प्रभाकर
राजगढ़ कॉलेज, राजगढ़ (अलवर) राज.

38
सहस्रपाठक
CO-ORDINATOR
RAJAG-COLL
राजगढ़ कॉलेज, राजगढ़ (अलवर) राज.

Photocatalytic Degradation of Health Hazardous Dye Alizarin Red by Zinc Oxide in Aqueous Solution

Vinod Kr. Sharma¹, Ashok Kr. Kakodia², Praveen Meena², Bhupendra Kr. Sharma²

¹Department of Chemistry, H.N.P. G. College, Udaipur-(Raj.)

²Department of Chemistry, S.G.G.Govt.College, Banswara-327001(Raj.) India
kakodia30@gmail.com, bhupendkrsharma@gmail.com

Abstract : *Photocatalytic degradation of Alizarin Red by ZnO has been investigated under different conditions. The effects of some parameters such as pH, amount of ZnO, dye concentration and irradiation time on the degradation rate of dye solution were also examined. A tentative mechanism has also been proposed for this photocatalytic degradation.*

Keywords: Photocatalysis, Degradation, ZnO, Alizarin Red Dye.

Introduction

Textile industries produce large volume of colored dye effluents which are toxic and non-biodegradable¹. These dyes create severe environmental pollution problems by releasing toxic and potential carcinogenic substances into the aqueous phase. Various chemical and physical processes such as precipitation, adsorption, air stripping, flocculation, reverse osmosis and ultrafiltration can be used for color removal from textile effluents². However these techniques are non-destructive since they only transfer the non-biodegradable matter into sludge, giving rise to new type of pollution, which needs further treatment³⁻⁸.

Recently there has been considerable interest in the utilization of advanced oxidation processes (AOPs) for the complete destruction of dyes. AOPs are based on generation of reactive species such as hydroxyl radicals that oxidize a broad range of organic pollutants quickly and non-selectively^{9,10}. AOPs include photocatalysis systems such as combination of

semiconductors and light, and semiconductor and oxidants.

Semiconductors (such as TiO₂, ZnO, Fe₂O₃, CdS, and ZnS) can act as sensitizers for light-induced redox-processes due to the electronic structure of the metal atoms in chemical combination, which is characterized by a filled valence band and an empty conduction band¹¹. Upon irradiation, valence band electrons are promoted to the conduction band leaving a hole behind. These electron-hole pairs can either recombine or can interact separately with other molecules. The holes may react either with electron donors in the solution, or with hydroxide ions to produce powerful oxidizing species like hydroxyl (oxidation potential 2.8 V) or super oxide radicals¹². Although, TiO₂ in the anatase form has been used for many environmental applications, ZnO (3.2 eV) is a suitable alternative to TiO₂ so far as band gap energy is concerned. The quantum efficiency of ZnO powder is also significantly larger than that of TiO₂ powder, and higher catalytic efficiencies have been reported for ZnO¹³.

The hydroxyl radical ($\cdot\text{OH}$) is a powerful oxidant for degrading non selective organic compounds¹⁴. The most frequently used photocatalysts are TiO₂, ZnO, ZrO₂, CdS, and SnO₂¹⁵. Among these ZnO removed several environmental contaminants under UV irradiation¹⁶. While the great advantage of ZnO is its ability to absorb larger fractions of the solar spectrum than the other photocatalysts¹⁷ and removed many organic contaminants in aqueous solution under visible irradiation^{18,19}. More recently previous work shows

Physico-Chemical Analysis of Ground Water of Village Amar Singh Ka Gada Of Ghatol Block, Banswara (Rajasthan)

Kailash Machchhar¹, Santosh Kumar Verma², Kumud tanwar³,
Swati Singh³ & Ashok Kumar Jaiswal¹

¹Govind Guru Tribal University, Banswara, Rajasthan, India

²Govt. Girls College Neenkathana, Sikar Rajasthan, India

³Kanoria P.G. Mahila Mahavidyalaya, Jaipur Rajasthan, India

ABSTRACT: The ground water quality is determined in Amar singhka Gada villages of Ghatol block that lays in Banswara southern parts of Rajasthan, where from village ground water samples are under studied for Physico-chemical status of ground water. In Physico-chemical analysis, various quality parameter are measured including pH, total dissolved solids (TDS), Fluoride(F), Chloride(Cl), Iron (Fe) and Nitrate (NO₃⁻) concentration present in ground water. Also all parameters were compared with WHO standards of water quality.

Keywords: Ground water, physico-chemical analysis, Chloride, Nitrate, Fluoride, TDS, Ghatol block of Banswara.

I. INTRODUCTION

Water plays an essential role in human life. Although statistics, the WHO reports that approximately 36% of urban and 65% of rural Indian were without access to safe drinking water¹. Fresh water is one of the most important resources crucial for the survival of all the living beings. It is even more important for the human being as they depend upon it for food production, industrial and waste disposal, as well as cultural requirement². Human and ecological use of ground water depends upon ambient water quality. Human alteration of the landscape has an extensive influence on watershed hydrology³.

Ground water plays an integral role in human life. The consequences of urbanization and

industrialization leads to spoil the water for agricultural purposes ground water is explored in rural especially in those areas where other sources of water like dam and river or a canal is not considerable^{4,5}. During last decade, this is observed that ground water get pollute harshly because of increased human activities. Consequently number of cases of water borne diseases has been seen which are cause to health threats. An understanding of water chemistry is the bases of the knowledge of the multidimensional facet of aquatic environmental chemistry which involves the source, composition, reactions and transportation of water. The constitution of water is of vital concern for the mankind since it is directly linked with human welfare⁶⁻¹¹.

STUDY AREA:

Study area comprises of Banswara district of Rajasthan state. Banswara district is one of the thirty three district of Rajasthan state and their administrative headquarter is located in Banswara. It is a part of Udaipur division. Banswara district falls within South Rajasthan in India. Its area spread over a total geographical area of 5037 sq km. It is also known as "City of Hundred Islands". In our present research paper physico-chemical analysis was carried out for Amar Singh Ka Gada village of Ghatol block.

IMMINENT ATTRIBUTES OF SPLENDID STAR FRUIT (*AVERRHOA CARAMBOLA* L.)Lakha Ram¹, Sukhraj Punar², Sulochana Sharma², Ashok K. Kakodia³, Raaz K. Maheshwari²¹Department of Chemistry, JNMP Govt PG College, Phalodi, Jodhpur, Rajasthan, India.²Department of Chemistry, SBRM Govt PG College, Nagaur, Rajasthan, India.³Department of Chemistry, SGG Govt PG College, Banswara, Rajasthan, India.

Received on: 15/09/2020

Revised on: 05/10/2020

Accepted on: 26/10/2020

*Corresponding Author

Raaz K. Maheshwari

Department of Chemistry,
SBRM Govt PG College,
Nagaur (Rajasthan).**ABSTRACT**

Indisputably, fruits are very important in our daily diet for various health benefits. However, some fruits may contain high amounts of unique secondary metabolites, which are hazardous to our health. Star-fruit plants are cultivated commercially in tropical countries for their fruits. This fruit have several medicinal properties; hence, it is used medicinally for many years in Ayurvedic treatments. Star-fruits contain various antioxidants which are considered medicinally important and beneficial for the health. The Starfruit is sweet tasting fruit that possesses high nutritional value. From the time immemorial, the whole starfruit tree is used as a traditional medicine. The medicinal properties of Starfruit include anti-inflammatory, analgesic, hypotensive, anthelmintic, anti-oxidant, anti-ulcer, hypocholesterolemic and hypolipidemic, antimicrobial, anti-tumor activities. It is effectively used in diabetes and help to reduce the risk of heart disease and stroke. The endeavour of this review is to highlight the nutritional aspects, medicinal value, toxicological traits, phytochemical constituents, and pharmacological activities along with the current trends in research on starfruit.

KEYWORDS: Toxicity; TCM, CBX, Hypocholesterolemic, Hypolipidemic, Phytochemical constituents, Pharmacological activities.

INTRODUCTION

Natural products and especially those derived from higher plants have historically played a pivotal role in the discovery of new pharmaceuticals. India has a rich heritage of traditional medicine and the traditional health care system has been flourishing in many countries. Population in developing countries depends mainly on the indigenous traditional medicine for their primary healthcare needs.^[1-3] In recent years, the use of herbal medicines worldwide has provided an excellent opportunity to India to look for therapeutic lead compounds from an ancient system of therapy, i.e. Ayurveda, which can be utilized for development of new drug. Over 50% of all modern drugs are of natural product origin and they play an important role in drug development programs of the pharmaceutical industry.^[4,7]



There are estimated to be around 25000 effective plant based formulations used in folk medicine and known to rural communities in India. It is estimated that there are over 7800 medicinal drug manufacturing units in India which consume about 2000 tones of herbs annually. At the present juncture, the modern conventional healthcare is burdened with great problems of unsafe medicines, chronic diseases, resistant infections, autoimmune disorders and degenerative disorders of ageing despite of great advances. Modern allopathic system has developed many sophisticated and costly diagnostic methodologies which at the times have made it quite exorbitant and beyond the reach of common man. Many modern synthetic drugs may harm more than they help in curing diseases by its serious effects.^[8-10] On contrary, traditional medicines which make use of plants are much more esteemed being more safe without harmful effects and comparatively less expensive than many allopathic medicines. Undoubtedly, the plant kingdom still holds many species of plants containing substances of medicinal value which have yet to be discovered. From the centuries, herbal medicines have been used to treat various diseases and now they had become an item of global importance, with both medicinal and economic implications. Selecting the right scientific and systematic approach to biological evaluation of plant products, based on their use in traditional medicine is the key to ideal development of new drugs from plants. One such plant is Averrhoa carambola (Oxalidaceae), traditionally



VERSATILE USAGE & THERAPEUTIC APPLICABILITY OF MIRACULOUS DRUMSTICK TREE (*MORINGA OLEIFERA*-LAM.)

Raaz K Maheshwari¹, Mahendra Singh Rathore², Sukhraj Punar¹, Anju Sharma¹,
Sulochana Sharma¹, Ashok K. Kakodia³ and MM Abid Ali Khan⁴

¹Department of Chemistry, SBRM Govt PG College, Nagaur (Rajasthan)

²Department of Zoology, SBRM Govt PG College, Nagaur (Rajasthan)

³Department of Chemistry, SGG Govt PG College, Banswara (Rajasthan)

⁴Department of Botany, Shia PG College, Lucknow (U.P.)

Review Paper

Received: 10.03.2020

Revised: 17.03.2020

Accepted: 05.04.2020

ABSTRACT

Moringa oleifera is known as “horseradish tree” or “drumstick tree”, native to India, is one of the best useful tree and an enormous amount of benefits in the world. Numerous Research reports have appeared in different national and international scientific journals by studying its nutritional and medicinal properties of *Moringa* over the past decades. Different reports show that due to its multipurpose uses. *Moringa oleifera* is a tree that is sometimes called a “Miracle Tree” because of all its parts are used for nutritional, pharmacological properties. *Moringa* is a very valuable food crop (it is highly nutritive, grows very fast and drought resistant) and even beyond food it serves many benefits in developing countries such as having an ability to be used for some crafts (due to being a tree) and cleaning water. With its high nutritive values, every part of the tree is suitable for either nutritional or commercial purposes. *Moringa* has antioxidants which combine with the reactive oxygen species and prevent cell damage and further consequences. In addition to vitamin C, β -carotene, and Quercetin which are powerful antioxidant help lower blood pressure. *Moringa* seeds and leaves could be an effective and safe alternative remedy in sexual disorders. *Moringa* has traditionally been used to boost sexual stamina and desire and to treat male sexual disorders. In more recent times, *Moringa* has gained notoriety as a very nutritious plant that can feed the needy and, in fact, save lives. *Moringa* leaves or leaf powder can be used successfully as a supplement food to nourish small children, pregnant or nursing women, and of course, anybody else. In this paper, versatile uses and therapeutic applicabilities of *Moringa oleifera* have been precisely delineated.

Keywords: Lactogogues, Stigmasterol, Sitosterol, Ampsterol, Malnutrition, Hypocholesterolemic, Zeatin.

INTRODUCTION

Moringa is a plant that is native to areas of India, Pakistan, Bangladesh, and Afghanistan. This tree was introduced to Malawi by settlers from India and is still closely associated with the low-altitude areas where they settled. It has been introduced throughout the tropics and subtropics and has become naturalized in many African countries. The cultivation of *moringa* in India occurs mainly in the southern states of Tamil Nadu, Karnataka, Kerala, Andhra Pradesh as well as in central India also. This fast-growing

tree is grown for human food, livestock forage, medicine, dye, composting, and water purification.

Every part of *M. oleifera* is a storehouse of important nutrients and antinutrients. The pods are fibrous and are valuable to treat digestive problems and thwart colon cancer. *Moringa* has lot of minerals that are essential for growth and development among which, calcium is considered as one of the important minerals for human growth¹⁻³.

*Corresponding author: gcacs60r@gmail.com

राजकीय प्रयोगशाला
राज. (अलवर)

INCREDIBLY VIVACIOUS *AEGLE MARMELOS* L. CORR. (WOOD APPLE) AND ITS COMPREHENSIVE THERAPEUTIC BENEFITS: AN EXTENSIVE LITERATURE REVIEW

Ravi Sharma¹, Abhilasha Chaudhary², Lakha Ram³, Ashok K. Kakodia⁴, Sukanya⁵, Anshu Choudhary⁶, Anshu Choudhary⁷, Anshu Choudhary⁸, Anshu Choudhary⁹, Anshu Choudhary¹⁰, Anshu Choudhary¹¹, Anshu Choudhary¹², Anshu Choudhary¹³, Anshu Choudhary¹⁴, Anshu Choudhary¹⁵, Anshu Choudhary¹⁶, Anshu Choudhary¹⁷, Anshu Choudhary¹⁸, Anshu Choudhary¹⁹, Anshu Choudhary²⁰, Anshu Choudhary²¹, Anshu Choudhary²², Anshu Choudhary²³, Anshu Choudhary²⁴, Anshu Choudhary²⁵, Anshu Choudhary²⁶, Anshu Choudhary²⁷, Anshu Choudhary²⁸, Anshu Choudhary²⁹, Anshu Choudhary³⁰, Anshu Choudhary³¹, Anshu Choudhary³², Anshu Choudhary³³, Anshu Choudhary³⁴, Anshu Choudhary³⁵, Anshu Choudhary³⁶, Anshu Choudhary³⁷, Anshu Choudhary³⁸, Anshu Choudhary³⁹, Anshu Choudhary⁴⁰, Anshu Choudhary⁴¹, Anshu Choudhary⁴², Anshu Choudhary⁴³, Anshu Choudhary⁴⁴, Anshu Choudhary⁴⁵, Anshu Choudhary⁴⁶, Anshu Choudhary⁴⁷, Anshu Choudhary⁴⁸, Anshu Choudhary⁴⁹, Anshu Choudhary⁵⁰, Anshu Choudhary⁵¹, Anshu Choudhary⁵², Anshu Choudhary⁵³, Anshu Choudhary⁵⁴, Anshu Choudhary⁵⁵, Anshu Choudhary⁵⁶, Anshu Choudhary⁵⁷, Anshu Choudhary⁵⁸, Anshu Choudhary⁵⁹, Anshu Choudhary⁶⁰, Anshu Choudhary⁶¹, Anshu Choudhary⁶², Anshu Choudhary⁶³, Anshu Choudhary⁶⁴, Anshu Choudhary⁶⁵, Anshu Choudhary⁶⁶, Anshu Choudhary⁶⁷, Anshu Choudhary⁶⁸, Anshu Choudhary⁶⁹, Anshu Choudhary⁷⁰, Anshu Choudhary⁷¹, Anshu Choudhary⁷², Anshu Choudhary⁷³, Anshu Choudhary⁷⁴, Anshu Choudhary⁷⁵, Anshu Choudhary⁷⁶, Anshu Choudhary⁷⁷, Anshu Choudhary⁷⁸, Anshu Choudhary⁷⁹, Anshu Choudhary⁸⁰, Anshu Choudhary⁸¹, Anshu Choudhary⁸², Anshu Choudhary⁸³, Anshu Choudhary⁸⁴, Anshu Choudhary⁸⁵, Anshu Choudhary⁸⁶, Anshu Choudhary⁸⁷, Anshu Choudhary⁸⁸, Anshu Choudhary⁸⁹, Anshu Choudhary⁹⁰, Anshu Choudhary⁹¹, Anshu Choudhary⁹², Anshu Choudhary⁹³, Anshu Choudhary⁹⁴, Anshu Choudhary⁹⁵, Anshu Choudhary⁹⁶, Anshu Choudhary⁹⁷, Anshu Choudhary⁹⁸, Anshu Choudhary⁹⁹, Anshu Choudhary¹⁰⁰

¹Department of Chemistry, Jai Narain Vyas University, Jodhpur (Rajasthan) India.
²Department of Botany, MLB Govt College, Nokha, Bikaner (Rajasthan) India.
³Department of Chemistry, JNMP Govt PG College, Phalodi, Jodhpur (Rajasthan) India.
⁴Department of Chemistry, SGG Govt PG College, Banswara (Rajasthan) India.
⁵Department of Chemistry, SBRM Govt PG College, Nagaur (Rajasthan) India.

Received on: 05/10/2020
 Revised on: 25/10/2020
 Accepted on: 15/11/2020

*Corresponding Author

Raaz K. Maheshwari
 Department of Chemistry, Jai
 Narain Vyas University,
 Jodhpur (Rajasthan) India.

ABSTRACT

Medicinal plants are used in herbalism. They form an available source for healthcare purposes in rural and tribal areas. Several *Aegle marmelos* have been reported as various traditional healers for treating various ailments of mankind. These plants possess various pharmacological activities such as Antioxidant, Antibacterial, Antifungal, Antiproliferative, Cytoprotective, Hepatoprotective, Antiarthritic, Contractile, Antihyperlipidemic, Anticancer, Antiviral, Anti-ulcer, Immunomodulatory, and Healing properties. A number of biologically active compounds in various parts of *A. marmelos* which belongs to various chemical classes. Baelong to Alkaloids, Terpenoids, Vitamins, Carbohydrates, Flavonoids, Fatty Acids, Essential Oils and some other compounds. This review mainly focused on several phytochemical and pharmacological studies which have explained phytoconstituents and therapeutic potential of *A. marmelos*.

KEYWORDS: Phytochemistry, Pharmacological activities, Therapeutic potential, Ethnomedicinal uses.

INTRODUCTION

Aegle marmelos (L.) Correa (*A. marmelos*), commonly known as Bael belonging to the family Rutaceae, has been widely used in indigenous systems of Indian medicine due to its various medicinal properties. *A. marmelos* is native to Northern India, but widely found throughout the Indian Peninsula and in Ceylon, Burma, Bangladesh, Thailand and Indo-China. Bael is a sacred tree native to India and has great aesthetic value among Hindus as tree is worshiped in rituals by masses.

The plant is also known by different names as stone apple or wood apple, bili, bilva patra, Bengal quince or golden apple. The plant is mentioned as Tripatra in ancient Indian scriptures such as Yajurveda and Mahabharata. Its leaves are ternate and scented named as tripatras and are used in enchantments. The plant is also figured in Aranyakas and Hindu Sahintas. This plant is as old as Hindu civilization and has great aesthetic, cultural, and medicinal value. Bael fruit looks like a skull that is why it is called as Seer Phael (head-fruit) or most likely Seer Phal. Sanskrit literary books and in ritualistic literature, it is mentioned as "ShreePhal." Bael tree is grown in gardens mainly near to the Shiva temples for worshipping of Lord Shiva. Devotees offer scented leaves

and fruits to Lord Shiva. *Aegle marmelos* (Fig. 1) is also called Shivadurme because that tree signifies the presence of Lord Shiva.



Fig. 1: Bael (*Aegle marmelos* L. Corr.).

In the traditional Indian medicine, Shivadurme is worshiped by young girls in their rituals and by a married woman to pray for the well-being of their husband. Both leaves and fruits are used in various rituals. The importance since the tree is regarded as one of the sacred trees of Indian heritage. Bael is a very important tree having sacrificial importance. The tree is very long, having an axillary spine. It is a very old tree and the planting of this tree by the way side



Phytochemical Composition and Pharmacological Potential of *Adhatoda vasica* L. Medic. Syn. A. vasica L. Nees

Harsukh Chharang¹, Lakha Ram², Ashok K Kakodia³ and Raaz K Maheshwari^{1*}

¹Department of Chemistry, SBRM Govt PG College, Nagaur, Rajasthan, India

²Department of Chemistry, JNMP Govt PG College, Phalodi, Jodhpur, Rajasthan, India

³Department of Chemistry, SGG G PG College, Banwara, Rajasthan

*Corresponding Author: Raaz K Maheshwari, Department of Chemistry, SBRM Govt PG College, Nagaur, Rajasthan, India.

Received: November 15, 2020

Published: November 07, 2020

© All rights reserved by Raaz K

Maheshwari et al.

Abstract

Innumerable natural products with inherent potential biological activity procured from plants have been playing a significant role in improving the human health since the dawn of civilisation. As more than 50% of modern clinical drugs are derived from natural products. Therefore, based on latter, the approach to new drug discovery and its development in pharmaceutical industry has emerged significantly. *A. vasica* is a good source of pyrroloquinoline alkaloids such as vasicine, vasicinone, vasicinol, vasicinolone etc. which are the chief constituents of different extracts of the plant. These compounds exhibit various biological and pharmacological activities viz. anti-malarial, anti-inflammatory, antioxidant, antidiabetic, anti-cancer etc. Further, *Adhatoda* leaves have been used extensively in Ayurvedic medicine for the treatment of diabetes, hypertension, vomiting and leprosy etc. Herbal medicine is still the mainstay of about 75-80% of the population in the developing countries, for primary health care because of better cultural acceptability, better compatibility with the human body and lesser side effects. However, the last few years have seen a major increase in their use in the developed countries. As people are concerned they must be further characterized after their pharmacological screening for their pharmacodynamic properties, including toxicity. Therefore, the present communication enumerates the phytochemical composition and pharmacological potential of *A. vasica*.

Keywords: *Adhatoda vasica*; Secondary Metabolites; Pyrroloquinoline Alkaloids; Biological Activity

Introduction

Adhatoda vasica is popularly known as Basak in Bangla, Malabar Nut in English, Adosa in Hindi and Vasaka in Sanskrit. It has been used in preparation of herbal medicines for the past 2000 years. It is a medicinal plant native to Asia, widely used in Siddha Medicine, Ayurvedic and Unani system of medicine [1]. The plant's range includes Sri Lanka, Nepal, India, Pakistan, Indonesia, Malaysia and China as well as Panama where it is thought to have been introduced. This evergreen perennial shrub has leathery leaves. The flowers are dense and large having large bracts and whitish pink/purple colored. The herb is often grown as a hedge and its leaves and twigs are utilized as green-manure. The whole plant or its roots, leaves, bark and flowers are used in various herbal preparations. They are oppositely arranged, smooth-edged, and borne on short petioles [2-5].

It has been revealed that the quinazoline based alkaloids have been the chief constituents present in the different parts of *A. vasica*. They have been mainly responsible for their wide range of biological potential. Research performed has revealed that vasicine and vasicinone (quinazoline ring derivatives) present in the leaves, possess respiratory stimulant activity. Vasicinolone, vasicinol and pegamine [6-18] are also reported. Vasicinone (3-hydroxy-2,3-dihydropyrrolo[2,1-b]quinazolin-3-ol, C₁₁H₁₀N₂O₂) and vasicine (3-hydroxy-2,3-dihydropyrrolo[2,1-b]quinazolin-3-ol, C₁₁H₁₀N₂O₂) (isolated from leaves, stem and roots) and vasicinone (derived from leaves) etc. Recent investigations have shown that vasicine showed bronchodilatory activity comparable to salbutamol, both *in vitro* and *in vivo*. Vasicinone also showed a pronounced bronchodilatory activity.

31
Co-ordinator
IGNAC-CELEST
राजकीय वैद्यकीय महाविद्यालय, राजपुर, राजस्थान

दृष्टिकोण

कला, मानविकी एवं वाणिज्य की मानक शोध पत्रिका

प्रधान संपादक

डॉ. अश्विनी महाजन

दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली

संपादक

डॉ. प्रसून दत्त सिंह

महात्मा गांधी केन्द्रीय विश्वविद्यालय, मोतिहारी

डॉ. फूल चन्द

दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली

दृष्टिकोण प्रकाशन

दृष्टिकोण प्रकाशन
राजकीय विश्वविद्यालय
राजगढ़ (अलवर) राज.

36
Cooper's
युवा प्रतिष्ठान
राजकीय विश्वविद्यालय, राजगढ़ (अलवर) राज.

वर्ष : 12 अंक : 2 □ मार्च-अप्रैल, 2020

दृष्टिकोण

संपादक मंडल

डॉ. अरुण अग्रवाल
ट्रेन्ट विश्वविद्यालय, पीटरबरो, ओंटारियो
डॉ. दया शंकर तिवारी
दिल्ली विश्वविद्यालय
डॉ. आनंद प्रकाश तिवारी
काशी विद्यापीठ विश्वविद्यालय, वाराणसी
डॉ. प्रकाश सिन्हा
इलाहाबाद विश्वविद्यालय, इलाहाबाद
डॉ. दीपक त्यागी
दीन दयाल उपाध्याय विश्वविद्यालय, गोरखपुर
डॉ. अरुण कुमार
रांची विश्वविद्यालय, रांची
डॉ. महेश कुमार सिंह
सिद्ध कान्हू विश्वविद्यालय, दुमका
डॉ. हरिश्चन्द्र अग्रहरि
अवधेश प्रताप सिंह विश्वविद्यालय, रीवा

डॉ. पूनम सिंह
बी.आर.ए. बिहार विश्वविद्यालय, मुजफ्फरपुर
डॉ. एस. के. सिंह
पटना विश्वविद्यालय, पटना
डॉ. अनिल कुमार सिंह
जे.पी. विश्वविद्यालय, छपरा
डॉ. मिथिलेश्वर
वीर कुंअर सिंह विश्वविद्यालय, आरा
डॉ. अमर कान्त सिंह
तिलका मांझी भागलपुर विश्वविद्यालय, भागलपुर
डॉ. ऋतेश भारद्वाज
दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली
डॉ. स्वदेश सिंह
दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली
डॉ. विजय प्रताप सिंह
छत्रपति साहूजी महाराज विश्वविद्यालय, कानपुर

संपादकीय सम्पर्क:

448, पॉकेट-5, मयूर विहार, फेज-1, दिल्ली-110091

फोन : 011-22753916, 35522994 Mobile: 9710050610, 9810050610

e-mail : editorialindia@yahoo.com; editorialindia@gmail.com; delhijournals@gmail.com

Website : www.ugc-care-drishtikon.com

©Editorial India

Editorial India is a content development unit of Permanence Education Services (P) Ltd.

ISSN 0975-119X

नोट: पत्रिका में प्रकाशित लेखकों के विचार अपने हैं। उसके लिए पत्रिका/संपादक/संपादक मंडल को उत्तरदायी नहीं उतराया जा सकता। पत्रिका से सम्बंधित किसी भी विवाद के निपटारे के लिए न्याय क्षेत्र दिल्ली होगा।

(ii)

मार्च-अप्रैल, 2020

प्राचार्य
राजकीय राजकीय महाविद्यालय
राजगढ़ (अल्मोड़ा) राज.

GOVT. College Rajgarh (Awar) Rajgarh
राजकीय महाविद्यालय राजगढ़ (अल्मोड़ा) राज.

भारतीय पुलिस के समक्ष चुनौतियाँ एवं समाधान

डॉ० राजनी मोना

सहायक आचार्य, राजनीति विज्ञान, राजकीय महाविद्यालय, राजगढ़ (अलवर)

शोध सारांश

भारतीय संविधान में अनुच्छेद 246 और सातवीं अनुसूची में पुलिस राज्य सूची का विषय है। भारत में पुलिस प्रणाली का प्रमुख उद्देश्य संवैधानिक, विधिसम्मत एवं लोकसम्मत तरीके से सामाजिक समरसता, शांति व्यवस्था एवं भाईचारे को बढ़ावा देना है। इस उद्देश्य की पूर्ति के लिए भारतीय पुलिस द्वारा कठिन परिश्रम किए जाने एवं अपने कर्तव्यों का निर्वहन करने के पश्चात् भी भारतीय पुलिस की छवि सम्मानजनक नहीं बन पाई है। भारतीय पुलिस पर मानवाधिकारों के उल्लंघन के आरोप लगते रहे हैं जबकि सीमित उपलब्ध संसाधनों, विभिन्न दबावों, अमानवीय दशाओं में कार्य करने के पश्चात् भी भारतीय पुलिस की छवि में सुधार न हो पाना अनुसंधान का विषय है।

भारतीय पुलिस पर प्रशासन में सुधार हेतु बहुत से प्रयास किये गये जिनमें आयोगों की सिफारिशें एवं न्यायालयों द्वारा निर्दिष्ट किया जाना सम्मिलित हैं। भारतीय पुलिस प्रशासन के अधिकारियों एवं कर्मचारियों के लिए कार्य की आवश्यक दशाएँ सुनिश्चित किये जाने की आवश्यकता एवं पुलिस प्रशासन के व्यवहार के मूल्यांकन से पूर्व उनसे जुड़ी हुई चुनौतियों का आलोकन किये जाने की आवश्यकता है।

मुख्य शब्द: भारतीय पुलिस, व्यवस्था, चुनौतियाँ, मानवाधिकार, सुधार

मुख्य आलेख

भारत की आजादी के 73 वर्षों के पश्चात् भी पुलिस प्रशासन की छवि जनता की नजरों में नकारात्मक बनी हुई है। वर्तमान में भी भारतीय पुलिस बल औपनिवेशिक काल के भारतीय पुलिस अधिनियम 1861 (IPA) द्वारा निर्देशित होता है। पुलिस अधिनियम 1861 के अन्तर्गत पुलिस व्यवस्था ब्रिटिश प्रशासन के सहायक यंत्र के रूप में स्थापित की गई थी। पुलिस व्यवस्था ब्रिटिश प्रशासन के अन्तर्गत जनता के शोषण एवं दमन का यंत्र रही। पुलिस प्रशासन की औपनिवेशिक मानसिकता एवं छवि बने रहने के महत्वपूर्ण कारकों में से पुलिस अधिनियम 1861 (IPA) रहा है।

वर्तमान में भी सरकारों का पुलिस प्रशासन पर राजनीतिक नियंत्रण बना हुआ है। पुलिस प्रशासन आज भी सत्तारूढ़ी सरकार के दबाव में रहकर ही कार्य करने की स्थिति में है। लोकतांत्रिक देश में पुलिस प्रशासन की सफलता का मूल्यांकन जनता के प्रति उसकी जवाबदेही ही तय करती है। पुलिस प्रशासन पर बाह्य राजनीतिक नियंत्रण एवं दबाव उनकी कार्य की क्षमता, प्रेरणा और कार्यशैली को प्रभावित करती हैं। पुलिस प्रशासन की कार्यशैली संविधान के अनुकूल, मानवाधिकारों एवं जनता के विश्वास पर आधरित होनी चाहिए।

पुलिस प्रशासन के अन्तर्गत पुलिस बल की कमी कानून एवं व्यवस्था को लागू करने में एक चुनौती के रूप में प्रकट होती है। संयुक्त राष्ट्र के मानक के अनुसार एक लाख नागरिक पर 222 पुलिसकर्मी होने चाहिए जबकि भारत में ये आँकड़ा औसतन 156 ही है। भारत में एक पुलिसकर्मी पर 841 व्यक्तियों की सुरक्षा का भार है। भारत में पुलिस फोर्स में 21.4 प्रतिशत पद खाली

मार्च-अप्रैल, 2020

(2365)

राजकीय महाविद्यालय
राजगढ़ (अलवर) राज.

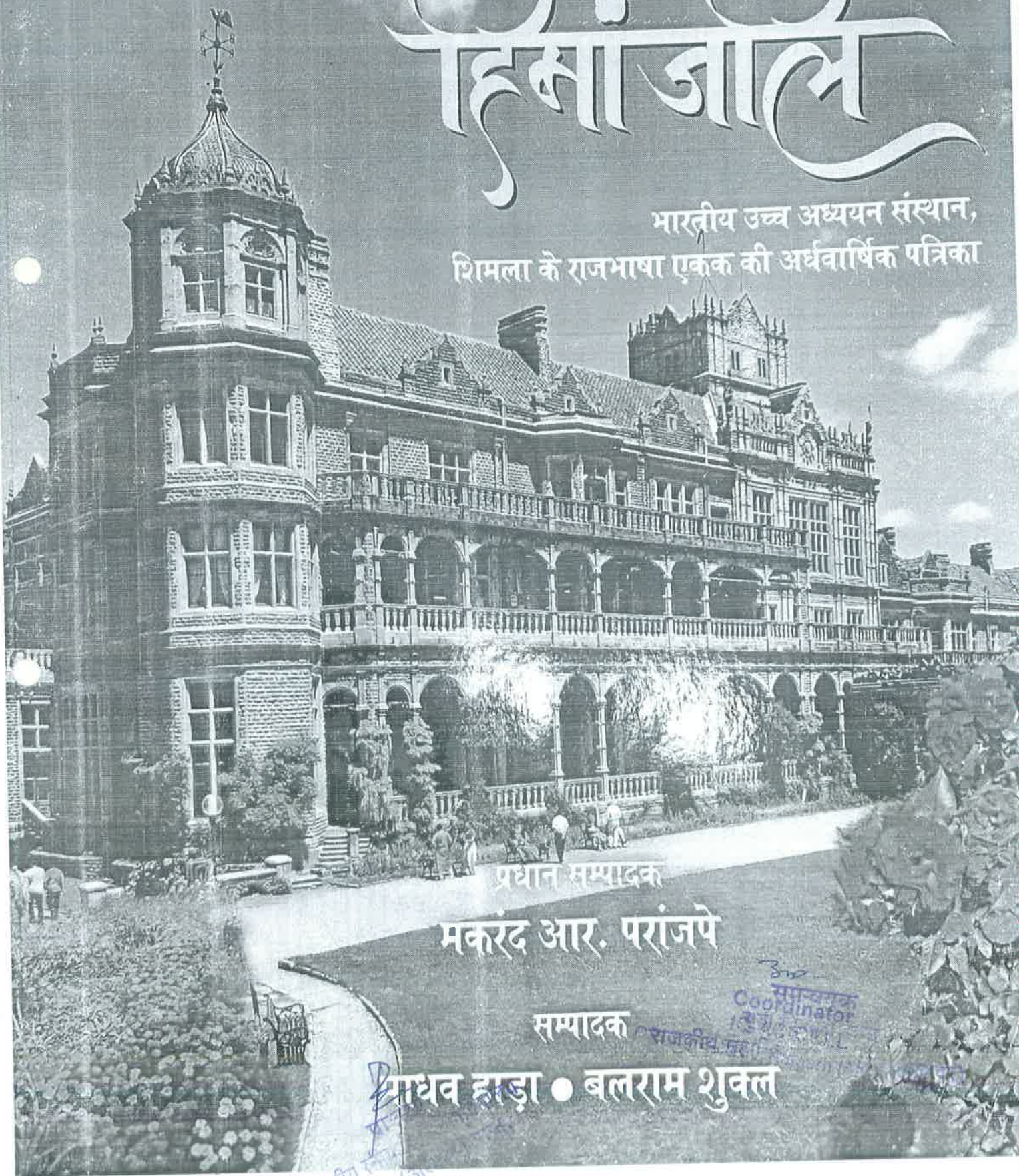
राजकीय महाविद्यालय
राजगढ़ (अलवर)



ISSN: 2349-4908
अंक-21, जनवरी-जून, 2020

हिमांजलि

भारतीय उच्च अध्ययन संस्थान,
शिमला के राजभाषा एकक की अर्धवार्षिक पत्रिका



प्रधान सम्पादक

मकरंद आर. परांजपे

सम्पादक

प्राधव झाड़ा • बलराम शुक्ल

सम्पादक
Coordinator

संयोजक

संयोजक

प्रधान सम्पादक
मकरंद आर. परांजपे
निदेशक, भारतीय उच्च अध्ययन संस्थान, शिमला

सम्पादक
माधव हाड़ा
अध्येता
बलराम शुक्ल
अध्येता

संयोजक
राजेश कुमार
हिन्दी अनुवादक

प्रकाशक
सचिव, भारतीय उच्च अध्ययन संस्थान
राष्ट्रपति निवास, शिमला-171005
दूरभाष : 0177-2831379
फैक्स : 0177-2830628
वेबसाइट : www.iias.ac.in

सह-प्रकाशक
वाणी प्रकाशन
4695, 21-ए, दरियागंज, नयी दिल्ली-110 002
फ़ोन : +91 11 23273167, 23275710
वेबसाइट : www.vaniprakashan.com

मुद्रक
धौमसन प्रेस (इंडिया) लि. में मुद्रित

प्रकाशित रचनाओं, लेखों में अभिव्यक्त विचार लेखकों के स्वयं के हैं, उनसे संस्थान व सम्पादक मण्डल का सहमत या असहमत होना आवश्यक नहीं है।

राजेश कुमार
संयोजक (हिन्दी)
राज.

हिंसांजलि

भारतीय उच्च अध्ययन संस्थान, शिमला के राजभाषा
एकक की अर्धवार्षिक पत्रिका

अंक-21, जनवरी-जून, 2020

अनुक्रम

पुरोवाक्	3
मकरंद आर. परांजपे (निदेशक)	
सम्पादकीय	6
माधव हाड़ा/बलराम शुक्ल	
कवि और कविताएँ	
मानवीय संवेदनाओं के चित्तरे कवि डॉ. रमेश पोखरियाल 'निशंक'	8
डॉ. योगेन्द्रनाथ शर्मा 'जरुण'	
कुछ गीत-कविताएँ	10
डॉ. रमेश पोखरियाल 'निशंक'	
बहुआयामी रचनाधर्मिता और डॉ. रमेश पोखरियाल 'निशंक'	11
प्रो. मंजुला राणा	
कविता	
फूल बेहतर हैं!	14
राजवीर शर्मा	
विशेष	
बेदिल देहलवी	15
वागीश शुक्ल	
जीवन का अमृततत्त्व : लोक संस्कृति	22
'अभिराज' राजेन्द्र मिश्र	
स्मरण प्रसाद	
प्रसाद की सांस्कृतिक और दार्शनिक दृष्टि	28
विजय बहादुर सिंह	
प्रसाद की कला दृष्टि	32
ब्रजरतन जोशी	
धर्म-संस्कृति	
भारतीय धर्मशास्त्र तथा उसकी प्रगतिशीलता	36
आशुतोष दयाल माथुर	
भारतीय राष्ट्रीय संस्कृति की आधारभूमि	42
शिवशरण कौशिक	

Sw
Cobalt
Rajesh Kumar
Raj.

भारतीय राष्ट्रीय संस्कृति की आधारभूमि

शिवशरण कौशिक*

विश्व के मानचित्र पर भारतवर्ष की अनेक विशिष्टताएँ हैं जिनके कारण इसकी अलग पहचान है। भारतवर्ष का इतिहास और संस्कृति सहस्राब्दियों का इतिहास और संस्कृति है जिसमें विगत दो-तीन हजार वर्षों का इतिहास तो राजनीतिक परिवर्तनों और शासन व्यवस्था के विभिन्न सोपानों का इतिहास है किन्तु यदि हम प्रागैतिहासिक भारतीय इतिहास पर दृष्टिपात करें तो पायेंगे कि यह विशुद्ध रूप से धर्म, दर्शन-संस्कृति, साहित्य व कलाओं के उत्कर्ष का काल रहा है। यह निर्विवाद सत्य है कि ऋग्वेद संसार का प्राचीनतम उपलब्ध ग्रन्थ है। ऋग्वेद की ऋचाओं के भावार्थ को सही परिप्रेक्ष्य में समझने वाले विद्वान् यह मानते हैं कि ऋग्वेद में जिस समाज की कल्पना की गयी है वह मानव जाति का एक आदर्श समाज है और यह कल्पना भारत भूमि की कल्पना ही हो सकती है। मनुष्यता के कल्याण के गूढ़-गम्भीर तत्त्व ही भारतीय संस्कृति के आधार तत्त्व हैं।

भारत जिस वैश्विक चेतना के विचार का केन्द्र रहा है उसका प्रमाण प्रागैतिहासकाल से लेकर

वैदिक आर्ष-साहित्य तथा मध्यकालीन सन्त-भक्त साहित्य से लेकर आधुनिक साहित्य तक आद्योपान्त दिखायी देता है। समूचा भारतीय वाङ्मय एक उदात्त और अविरल राष्ट्र भावना की प्रवहमान धारा है जिसमें भारतीय संस्कृति तथा भारतीय जीवन-दर्शन के उन भास्वर बिन्दुओं को स्थान दिया है जो देश और काल की सीमाओं का अतिक्रमण कर सार्वदेशिक और सार्वकालिक रूप में स्वीकार करने योग्य हैं। चिरकाल से हमारे देश में शिक्षा को भी संस्कृति और संस्कार का ही हिस्सा माना गया है। हमारे यहाँ शिक्षा, तो वास्तव में ज्ञान के सम्प्रेषण की विधि है। शिक्षा का अर्थ है, सिखलाना। लेकिन हम सिखलाएँगे क्या? इसके लिए हमारे यहाँ शब्द है, विद्या। विद्या को शिक्षा के माध्यम से प्रेषणीय करते हैं हम। और विद्या, यह ज्ञातव्य है, वह विषय है, जो हम आप तक पहुँचाना चाहते हैं। हमारे यहाँ मनीषियों ने इस विद्या को

ऋग्वेद की ऋचाओं के भावार्थ को सही परिप्रेक्ष्य में समझने वाले विद्वान् यह मानते हैं कि ऋग्वेद में जिस समाज की कल्पना की गयी है वह मानव जाति का एक आदर्श समाज है और यह कल्पना भारत भूमि की कल्पना ही हो सकती है। मनुष्यता के कल्याण के गूढ़-गम्भीर तत्त्व ही भारतीय संस्कृति के आधार तत्त्व हैं।

अर्थकारी और परमार्थकारी दो भागों में बाँटा है। अर्थकारी विद्या जो समाज में आपको उपयोगी बनाती है, जो आपको जीवन व आजीविका की सुविधा देती है, जिससे आप कर्म के क्षेत्र में, गाँव व नगर में, राष्ट्र में अपना स्थान बनाते हैं और परमार्थकारी विद्या जो विद्या है जिससे आप समष्टि से जुड़ते हैं। उसमें मानवीय मूल्यों व जिससे आपका हृदय बनता है, आपकी बुद्धि बनती है, आप उन्नत बनते हैं, स्नेहशील बनते हैं, सद्भाव एवं सम्पन्नता से पूर्ण मानव बनते हैं। जिससे आपकी बुद्धि और हृदय का परिष्कार होता है।

प्रख्यात कवयित्री महादेवी वर्मा के उक्त कथन को ध्यान रखते हुए शिक्षा ही विद्या का पर्याय बनकर संस्कृति का पर्याय बन जाती है। निश्चित ही यह तय है कि जिस देश की शिक्षण व्यवस्था

जितनी सुदृढ़ होगी वह उतना ही सुसंस्कृत होगा उसकी उज्ज्वल परम्परा उतनी ही उन्नत होगी। भारत का ऐसा इतिहास रहा है किन्तु कालान्तर में मध्यकाल की दासता ने हमें इस दृष्टि से कमजोर करने में कामयाब कर नहीं छोड़ी।

फिर भी अहिंसक

करुणा, अपरिग्रह, समन्वय और सद्भाव, विश्वबन्धुत्व, अध्यात्म मानवता की प्रबल खोज, प्रकृति के प्रति साधक भाव, पवित्र नदियों पर्वतों, वृक्षों-लताओं में देवत्व के दर्शन की धारणा तथा प्राण मात्र के प्रति करुणा की धारणा एक अद्भुत विचार दर्शन और संस्कृति का निर्माण करती है। अनेक उतुंग पर्वत मालाओं तथा उनसे निकलने वाली पावन सरिताओं ने हमारी भारतीय संस्कृति को सजल और सरस बनाया है। संसार के किसी पर्वत की जीव कथा इतनी रहस्यमयी न होगी जितनी हिमालय की है। उसकी चोटी, हर घाटी हमारे धर्म, दर्शन, काव्य से ही नहीं, बल्कि हमारे जीवन के सम्पूर्ण निःश्रेयस से जुड़ी हुई है। जिस प्रकार गंगा-यमुना और अन्तःसलिला सरस्वती के बिना हमारे महादेश के सजल हृदय की कल्पना नहीं की जा सकती, उसी प्रकार उत्तर के उतुंग हिमालय के बिना देश के उन्नत मस्तक की कल्पना करना सम्भव नहीं है।

*राजस्थान में उच्च शिक्षा से सम्बद्ध। पत्र-पत्रिकाओं में प्रकाशन। संस्थान के पूर्व सह-अध्यक्षता।

Determination of Sodium and Potassium in groundwater

Girdhari Lal Meena

Assistant Professor of Chemistry
Govt. PG College Rajgarh (Alwar)

Introduction

Determination of Sodium and Potassium in groundwater sample: Sodium (Na^+) and potassium (K^+) ions are naturally present in underground water and sometimes in surface water like salt-lake (Sambhar Salt Lake, Rajasthan). Both ions in water have been determined by the flame photometric method in the present study. This is centred on the emission spectroscopy, which contracts through the transfer of electrons from ground state to excited energy state and coming back to its original state with the emission of light.

➤ **Principle:** Sodium and Potassium dissociates into atoms when the sample solution sprayed on the flame with the help of an atomizer. Few of them become excited to higher energy levels, but not stable at higher energy levels. Thus, they emit radiations of specific wavelength when returning to the ground state. The emitted radiation generally belongs to the visible region. The intensity of emitted radiation can be measured by a photo-detector.

After prudently calibrating the flame photometer with a known concentration solution, it is likely to correlate the intensity of a given spectral line of the unknown water sample with the amount of an element that emits the particular radiation. The intensity of the emitted radiation is directly proportional to the concentration of the sample.

Below the emitted radiation wavelength and flame color for Na and K:

Entry	Element name	Emitted radiation wavelength (nm)	Flame colour
1	Sodium (Na^+)	589 nm	Yellow
2	Potassium (K^+)	766 nm	Violet

➤ **Apparatus:** Flame photometer with flame accessories.

➤ **Reagents:** Distilled water; stock sodium solution (1 mg/mL Na^+), and stock potassium solution (1 mg/mL K^+).

➤ **Procedure:** The detailed procedures for measuring the Na^+ and K^+ ion concentration from water sample considering the following steps:

(i) We turned on the air-gas mixture and calibrated the flame by adjusting the air-gas mixture to obtain the blue flame. The flame was then allowed to stabilize for about 5 min.

(ii) Then, we switched on the remaining instrument and opened the lid of the filter chamber.

(iii) The galvanometer's readings were adjusted to zero by spraying distilled water into the flame.

(iv) The sensitivity of the galvanometer reading to the desired mark was adjusted by spraying the most concentrated standard working solutions into the flame.

(v) Again, galvanometer's readings were readjusted to zero by spraying distilled water into the flame.

(vi) Now, each of the standard stock solutions was sprayed thrice for each solution into the flame and recorded the galvanometer readings.

(vii) After each analysis, the instrument was carefully washed before starting new sample analysis.

(viii) The water sample was sprayed into the flame and recorded the galvanometer readings. This step was repeated thrice for each sample.

Finally, we plot the graph between concentrations and mean galvanometer reading to find out the element concentration in the unknown water sample.

गिरधारी लाल मीना
राजगढ़ (अलवर) राज.

सुमनलका
Coordinator
रजगढ़ (अलवर) राज.



IJARESM

ISSN: 2455-6211, New Delhi, India

International Journal of All Research Education & Scientific Methods

An ISO & UGC Certified Peer-Reviewed Multi-disciplinary Journal

UGC Journal No. : 7647

Certificate of Publication

विस्न्जी लाल रैगर

सहायक आचार्य, भूगोल, राजकीय महाविद्यालय, राजगढ़, अलवर, राजस्थान

TITLE OF PAPER

विश्व स्तर सतत विकास का भौगोलिक अध्ययन

has been published in

IJARESM, Impact Factor: 4.597, Volume 8 Issue 4, April-2020

Paper Id: IJARESM/Apr20

Date: 16-04-2020




राजकीय महाविद्यालय
राजगढ़ (अलवर) राज.




Authorized Signatory
राजकीय महाविद्यालय
राजगढ़ (अलवर) राज.



ORIGINAL RESEARCH PAPER

Economics

RAJASTHAN HEALTHCARE & INFRASTRUCTURE STATUS

KEY WORDS: Healthcare, Infrastructure Status, Health Spending

Shiv Sharma

Assistant Professor Department Of Economics Govt P.G College Rajgarh, Alwar, Rajasthan & Research Scholar Raj Rishi Bhartrihari Matsya University, Alwar, Rajasthan

ABSTRACT

"The success or failure of any government in the final analysis must be measured by the well-being of its citizens. Nothing can be more important to a state than its public health; the state's paramount concern should be the health of its people." Franklin Delano Roosevelt (quoted in Gostin, 2000).
 Despite the fact that the government of Rajasthan has define an objective of expanding government Health spending to 2-3 percent of total national output throughout the following five years, even with idealistic presumptions, it can't meet the stated objective. In the wake of poor health infra across the state, therefore researcher has tried to paint the clear and gloomy picture of health facilities across state.
 Providing Quality health services to the poor and unprivileged is like making ivory tower and far away for the ground reality unless state of the art health facilities are not developed in the state, which will also help state to boost its economy in light of medical tourism.

II. INTRODUCTION

A powerful public health framework that can guarantee the nation's health requires the collaborative endeavors of an intricate system of individuals and organizations in the public and private parts, just as an arrangement of strategy and practice of governmental public health offices at the national, state, and neighborhood levels. In the United States, governments at all levels (bureaucratic, state, and nearby) have a particular duty to endeavor to create the conditions in which individuals can be as healthy as could be expected under the circumstances. For governments to assume their job inside the public health framework, strategy creators must give the political and monetary help required for solid and successful governmental public health offices.

In Rajasthan, which has a population of around seven crore, escalating costs on healthcare are troubling poor families. The state has been progressively redistributing healthcare administrations to private hospitals. A few people whined of being denied convenient treatment as they had not taken the Bhamashah health insurance card to the medical clinic at the hour of treatment.

Under 2% of the state's GDP is allocated to healthcare administrations - this is terribly inadequate, public health authorities said. They introduced around 30 contextual investigations of individuals denied of auspicious clinical health.

Jan Swasthya Abhiyan said the reliance on private hospitals was "prompting preoccupation of tremendous public assets into private hands but on the other hand is bringing about extreme instances of exploitation and maltreatment of patients by the private healthcare suppliers."

Numerous ladies discussed experiencing operations to forestall pregnancy. In any case, regardless of the operation, many got pregnant. "Rajasthan records most elevated rate of sterilization disappointments in the nation, including that this brings up a colossal issue on the nature of conceptive health administrations conveyed in the state.

There were instances of maternal and youngster deaths which featured different elements of carelessness and lack of care with respect to healthcare suppliers.

III. RAJASTHAN - HEALTHCARE PROFILE

• LIFE EXPECTANCY AT BIRTH

As indicated by Sample Registration System (SRS) in the period 1991-98, life expectancy in Rajasthan was 59.1 years

(58.3 for men and 59.4 years for ladies), 57 and 64.2 years in rustic and urban regions separately. During a similar timeframe, all India life expectancy figures (60.3 years - 59.7 years for men and 60.9 years for ladies; 58.9 in rustic territories and 65.9 in urban zones) were higher. During the previous five decades, Rajasthan has seen some improvement in life expectancy and related measures. As per the Census of India's estimates, life expectancy in Rajasthan expanded from 46.8 years for the period 1951-61 to 53 years for the period 1971-81

• INFANT MORTALITY RATE (IMR)

As per the Annual Health Survey (AHS) 2012-13 Rajasthan announced IMR at 55 at total. IMR was 59 and 38 in rustic segment and urban part individually for Rajasthan.

IMR recorded is least at 19 in Rudraprayag (Uttarkhand) while in Shrawasti (Uttar Pradesh) was most extreme at 103 showing a variation of multiple times. IMR in rustic zones of regions is essentially higher than in urban territories.

Additionally, neo-natal mortality rate and pre-natal mortality rate remained at 37 and 18 for Rajasthan according to the AHS 2012-13.

• CRUDE BIRTH RATE (CBR)

CBR alludes to the quantity of live births per thousand mid-year populations. Rajasthan had 24.1 CBR according to the AHS 2012-13, of which the rustic division and Urban Sector established of 25.2 and 20.8 CBR. Bageshwar (Uttarakhand) detailed least Crude Birth Rate (CBR) of 14.7 and most extreme announced is at 40.9 in Shrawasti (Uttar Pradesh).

• HUMAN DEVELOPMENT INDEX (HDI)

As indicated by the Annual Health Survey (AHS) 2012-13 Rajasthan had and HDI of 0.434, which was comparatively higher than HDI of 0.387 according to the HDR 1999. Furthermore, Rajasthan positioned (in India) 17 and 14 in HD 2007 update and HDR 1999 individually. India revealed HDI of 0.467 according to the HD report 2011 and as indicated by HDR (United Nations) 2014 India has HDI of 0.586.

• CRUDE DEATH RATE (CDR)

Rajasthan had 6.4 CDR according to the AHS 2012-13, of which the country segment and urban area comprised of 6.7 and 5.4 CDR. As per the World Bank report India has CDR of 8. Dhemaji (Assam) has the base CDR of 4.5 and most extreme is in Shrawasti (Uttar Pradesh) at 12.6.

• TOTAL FERTILITY RATE (TFR)

As indicated by the Sample Registration System (SRS) Report

Handwritten notes and stamps in Hindi, including 'राजस्थान', 'राज', 'राजकीय', and 'महाविद्यालय'.

FDI INFLOW BETWEEN INDIA AND CHINA AND ITS IMPACT ON INDIAN ECONOMY

¹Ashok Meena

Abstract

India and China are the two main developed world emerging economic powers, both in Asia with wide domestic markets and cheap labour, which are also tempting FDI targets. With China joining the WTO, it has fallen for China, since it has first moved from the United States and has drawn more FDI than any other region, for the first time in FDI economic history.

The key aim of the paper is to research comparatively the increasing structure and course of FDI in India and China. It is well recognized that FDI will supplement local growth initiatives in numerous ways, including the promotion of export productivity, the growth and enhancement of job skills, technical capacity building and financial development capital increase.

India can learn a lot from China, our effective neighbor's FDI policy and experience, to attract FDI and use it effectively for its growth. This chapter aims to examine and compare the progress of China's FDI policy with India to allow us to learn from China's experiences and to minimize our shortcomings and improve our FDI-related reforms.

Keywords: - FDI, FII, INDIA, CHINA, FDI Policy, Investment, Inflow, Economies

I. Introduction

Some developing countries have achieved higher growth, and some couldn't draw too much FDI to expand effectively, due to the transnational transactions of FDI. While India has the ingredients to prosper in strong demographics, China has more success in the attraction of FDI on a wide domestic market. For nearly a quarter of a century, foreign investment has played an important role in China's economic growth and is crucial to this development. But while China has made tremendous strides in attracting FDI so far and in developing the FDI

¹Assistant Professor, Department of Economics, Govt. P.G College, Rajgarh Alwar, Rajasthan, India

राजकीय आचार्य
राजकीय आचार्य महाविद्यालय
राजगढ़ (अलवर) राज.

30/11/20
Co-ordinator
गुणवत्ता नियंत्रण
GOVT. COLLEGE, Rajgarh (Alwar) Rajasthan